श्रावण मास, कृष्ण पक्ष 1 वर्ष, अंक 8, पृष्ठ 4, मूल्य 1.00

अखण्ड भारत सन्देश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण | प्रयागराज | गुरूवार 13 अगस्त, 2020 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट

बेंगलुरु हिंसा में SDPI नेता गिरफ्तार, 3 की मौत, 250 गाड़ियां खाक

बेंगलुरु, एएनआइ। बेंगलुरु में सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर मंगलवार की रात हिंसा भड़क गई। इस दौरान हालात को काबू करने के लिए पुलिस को फायरिंग भी करनी पड़ी, जिसमें दो लोगों की मौत हो गई। वहीं, एक अन्य शख्स को घायल अवस्था में अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अचानक भड़की हिंसा में 60 पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं। वहीं, मामले में पुलिस ने अबतक 145 लोगों को गिरफ्तार किया है। हालात को देखते हुए इलाके में CRPF और CISF की कुछ कंपनियों को भी तैनात किया गया है। कर्नाटक के सीएम येदियुरप्पा ने घटना के पीछे जिम्मेदार लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की बात कही है। कर्नाटक के गृह मंत्री बसवराज बोम्मई ने बेंगलुरु हिंसा पर कहा कि यह निर्णय लिया गया है कि जिला मजिस्ट्रेट घटना की जांच करेंगे। अब तक 146 लोगों को गिरफ्तार किया गया है।

वहीं, बेंगलुरु हिंसा पर कर्नाटक के मंत्री सीटी रवि ने कहा कि दंगे की योजना बनाई गई थी। संपत्ति के विनाश में पेट्रोल बम और पत्थरों का इस्तेमाल किया गया। 300 से अधिक वाहन जल गए। हमारे पास संदिग्ध हैं, लेकिन जांच के बाद ही पुष्टि हो सकती है। हम उत्तर प्रदेश की तरह दंगाइयों से संपत्ति की वसूली करेंगे।

बेंगलुरु के डीजे हल्ली और केजी हल्ली पुलिस थाना इलाके में देर रात ये हिंसा हुई, जिसके बाद इलाके में कर्फ्यू लगा दिया गया है। इसके साथ ही

बेंगलुरु में धारा 144 लगाई गई है। सोशल मीडिया पर भड़काऊ पोस्ट शेयर करने के आरोपी नवीन को गिरफ्तार कर लिया गया है। पुलिस के मुताबिक, अब स्थिति पूरी तरह से नियंत्रण में है। RAF, CRPF और CISF की कुछ कंपनियों को भी तैनात किया गया है। बेंगलुरु सिटी पुलिस कमिश्नर कमलकांत ने बताया कि फेसबुक पोस्ट के बाद लोग उस इलाके में इकट्ठा हो गए। हमारे ऑफिसर ने उन्हें हालात समझाने की कोशिश की। वो तत्काल गिरफ्तारी और अपने लिए सुरक्षा की मांग कर रहे थे। जब उन्हें समझाया गया कि ये इस तरह से नहीं हो सकता तो वो गुस्सा हो गए और पत्थरबाजी करने लगे। इस दौरान वाहनों में आग लगा दी गई और उन्हें क्षतिग्रस्त किया गया। एक ग्रुप बेसमेंट में गया और वहां करीब 200-250 वाहनों में आग लगा दी।

सरकार को पूरा समर्थनः शिवकुमार

बेंगलुरु हिंसा की की निंदा करते हुए कर्नाटक कांग्रेस के प्रमुख डीके शिवकुमार ने कहा कि हमारी पार्टी इस घटना की कड़ी निंदा करती है। मैंने आज हमारे विधायकों की बैठक बुलाई है। मैंने हमारे नेता सिद्धारमैया से बात की है, हम शांति और सद्भाव बनाए रखने के लिए सरकार को पूरा समर्थन देंगे।

अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाईः येदियुरप्पा

उन्होंने कहा कि अपराधियों के खिलाफ आदेश जारी किए गए हैं और स्थिति पर काबू पाने के लिए सरकार ने सभी संभव कदम उठाए हैं। पत्रकारों, पुलिस, जनता पर हमला अस्वीकार्य है। सरकार ऐसे उकसावों और अफवाहों को बर्दाश्त नहीं करेगी। अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

मंगलवार रात दंगा भड़कने के बाद कुछ मुस्लिम युवाओं ने डीजे पुलिस स्टेशन के इलाके में एक मंदिर के आसपास मानव श्रृंखला श्रंखला बनाकर दंगाइयों से उसका बचाव किया।

दो थाना क्षेत्रों में जोरदार प्रदर्शन

इतने पर ही लोगों का गुस्सा कम नहीं हुआ और उन्होंने डीजे हल्ली और केजी हल्ली पुलिस थाना इलाके में जोरदार प्रदर्शन किया। बताया जा रहा कि इसी दौरान हंगामा बढ़ने पर पुलिस ने भीड़ को हटाने की कोशिश की,आंसू गैस के गोले भी छोड़े गए। इसी बीच अचानक हिंसा भड़क उठी, जिसमें पुलिसकर्मियों को भी निशाना बनाया गया।

रेलवे के निजीकरण की तैयारी, रेलवे मंत्रालय द्वारा आयोजित बैठक में 23 कंपनियों ने लिया भाग

नई दिल्ली, एएनआइ। रेलवे के निजीकरण की तैयारी शुरू हो गई है। पीएसयू सहित कुल 23 कंपनियों ने देश में निजी ट्रेनों के संचालन में रुचि दिखाई, दरअसल, कुछ कंपनियों ने उन्होंने बुधवार को रेल मंत्रालय द्वारा आयोजित यात्री ट्रेनों परियोजना में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) के लिए दूसरे पूर्व-अनुप्रयोग सम्मेलन में भाग लिया। प्रतिभागियों में एल्सटॉम ट्रांसपोर्ट इंडिया लिमिटेड (लिमिटेड), बीईएमएल, भारत फोर्ज, बीएचईएल, बॉम्बार्डियर ट्रांसपोर्टेशन इंडिया, सीएएफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, गेटवे रेल, जीएमआर इन्फ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड, हिंद रेक्टीफायर्स लिमिटेड, आई-बोर्ड इंडिया लिमिटेड, आईआरसीटीसी लिमिटेड, आईएसक्यू एशिया । इन्फ्रास्ट्रक्चर इनवेस्टमेंट्स प्राइवेट लिमिटेड, जसन इंफ्रा प्राइवेट लिमिटेड, जेकेबी इंफ्रास्ट्रक्चर प्राइवेट लिमिटेड, एलएंडटी इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स लिमिटेड, मेधा, मेघा इंजीनियरिंग एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड, नेशनल इंवेस्टमेंट एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड लिमिटेड, पीएसजीजी टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, आरके एसोसिएट्स एंड होटलियर्स प्राइवेट लिमिटेड, सीमेंस लिमिटेड , स्टरलाइट पावर और टीटागढ़ वैगन्स लिमिटेड शामिल हैं।

बैठक में, रेलवे बोर्ड के सदस्यों ने एनआईटीआई अयोग के अधिकारियों के साथ प्री-बिड मीटिंग के दौरान निजी खिलाड़ियों द्वारा उठाए गए प्रश्नों का उत्तर दिया। रेल मंत्रालय (टङ्गफ) ने एक प्रेस नोट में कहा कि पैसेंजर ट्रेन परिचालनों में निजी भागीदारी के लिए परियोजना आधुनिक प्रौद्योगिकी रोलिंग स्टॉक की शुरूआत के माध्यम से पारगमन समय और आपूर्ति-मांग के घाटे को कम करते हुए सेवा की गुणवत्ता में काफी वृद्धि करके यात्री अनुभव में एक बदलाव लाएगी।ये परियोजना जनता के लिए परिवहन सेवाओं की उपलब्धता को बढ़ाएगी।

भारतीय रेलवे ने कहा कि परियोजना को शुरू करने के लिए निजी भागीदारों का चयन दो चरणों में किया जाएगा। इस प्रक्रिया में जिसमें अनुरोध के लिए अर्हता (फ्रम्ढ्ढ) और अनुरोध के लिए प्रस्ताव (फ्रम्ढ्ढ) शामिल हैं।

बेंगलुरु हिंसा पर TRS मंत्री ने लोगों से की अपील सोशल मीडिया पर शेयर ना करे फेक न्यूज

बेंगलुरु, पीटीआई। बेंगलुरु में सोशल मीडिया पोस्ट को लेकर शुरू हिंसा के बारे में तेलंगाना नगर प्रशासन मंत्री और सत्तारूढ़ टीआरएस (तेलंगाना राष्ट्र समिति) के कार्यकारी अध्यक्ष के टी रामा राव ने बुधवार को सोशल मीडिया उपयोगकताओं को हिंसा के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए और किसी भी फर्जी खबर को न फैलाने का आग्रह किया। वह मीडिया रिपोर्टों का जवाब दे रहे थे कि हिंसा भड़काने वाली एक सोशल मीडिया पोस्ट पर बेंगलुरु में हिंसा भड़क गई। उन्होंने कहा कि आपको यह दिखाना चाहिए कि सोशल मीडिया में फर्जी खबरें फैलाना कितना खतरनाक हो सकता है। सभी सोशल मीडिया यूजर्स को जिम्मेदार हो औन न ही फर्जी खबरें फैलाएं और न ही फर्जी खबरें फैलाने के लिए प्रोत्साहित करें।

भारी बारिश से कई दूसरे राज्यों में भी मंडराया बाढ़ का खतरा

बाढ़ में फंसे लोगों को सुरक्षित बाहर निकालते लोग

नई दिल्ली, जेएनएन। पहाड़ों और कुछ मैदानी इलाकों में लगातार बारिश के कारण कई जगहों पर बाढ़ की आशंका बढ़ गई है। केंद्रीय जल आयोग (सीडब्ल्यूसी) ने बुधवार को चेतावनी जारी कर देश के कई भागों में भारी बारिश की संभावना जताई है। भारतीय मौसम विभाग (आइएमडी) के हवाले से केंद्रीय जल आयोग ने हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान के पूर्वी क्षेत्र, मध्य प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में बारिश से बाढ़ का पूवार्नुमान जारी किया है। वहीं यूपी, बिहार और असम में बाढ़ से हालात बेहद खराब हो गए हैं।

उत्तराखंड के उत्तरकाशी, रुद्रप्रयाग, चमोली, बागेश्वर और पिथौरागढ़, राजस्थान के सीकर, जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, करई, बारां, टोंक, मध्य प्रदेश के श्योपुर और शिवपुरी में तेज बारिश होने का पूवार्नुमान है। वहीं हिमाचल में चंबा सहित कई स्थानों पर भी भारी बारिश का पूवार्नुमान है।

लगातार हो रही बारिश से कुमाऊं में दुश्वारियां बढ़ती जा रही हैं, जबकि गढ़वाल में भी बारिश और भूस्खलन से काफी नुकसान हो रहा है। बुधवार को पिथौरागढ़ जिले में जोरदार बारिश हुई। जिससे अस्कोट-कर्णप्रयाग मार्ग पर बेरीनाग व थल के मध्य सड़क धंस गई। थल-पांखू मार्ग पर रपटे में एक पिकअप वाहन बह गया। कई जगह भूस्खलन के कारण नुकसान हुआ है। बदरीनाथ क्षेत्र के 14 गांवों में दो दिन से विद्युत आपूर्ति ठप है। हालांकि, केदारनाथ हाईवे पांच दिन बाद सुचारू हो गया है, लेकिन प्रदेश में अब भी करीब 65 मार्गो पर आवाजाही बंद है।

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले की मूरंग तहसील के रिस्पा गांव में मंगलवार रात बादल फटने से करोड़ों की संपत्ति बह गई। बाढ़ के कारण रिस्पा में चेरांग खड्ड पर बना पुल व अकपा में सतलुज नदी पर लोहे का पुल बह गए। चेरंग गरंग नहर का करीब 300 से 400 मीटर हिस्सा बह गया है। रिस्पा संपर्क सड़क भी करीब 70 से 80 मीटर बह गई है। अकपा में पुल बहने से पूह, पोवारी, रिकांगपिओ व रामपुर की तरफ जाने वाले बड़े वाहनों की आवाजाही बंद हो गई है। चंबा जिले की परौथा पंचायत के तलानेर में घास काट रही महिला व उसका बेटा पहाड़ी से गिरे पत्थरों की चपेट में आ गए। दोनों की मौके पर ही मौत हो गई।

बिहार के नए इलाकों में बाढ़ का पानी घुस गया है जिससे 16 जिलों में 62 हजार और लोग प्रभावित हुए हैं। राज्य कुल 75 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हैं। बाढ़ प्रभावित पंचायतों की संख्या बढ़कर 1,260 हो गई है। बाढ़ से जुड़ी घटनाओं में अब तक 24 लोगों की मौत हो चुकी है। वहीं यूपी के 16 जिलों में 517 गांव बाढ़ की चपेट में हैं। शारदा नदी पलिया कला लखीमपुरखीरी, सरयू (घाघरा) नदी तुतीपार बलिया में खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। जिला स्तर पर कंट्रोल रूम को 24 घंटे सक्रिय रखने के निर्देश दिए गए हैं। असम के तीन जिलों में बाढ़ का संकट अभी भी बरकरार है।

सुशांत मामले की CBI जांच की मांग को लेकर सुनवाई आज

नई दिल्ली, पीटीआइ। अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले की एकीकृत सीबीआइ जांच की मांग को लेकर सुप्रीम कोर्ट में एक जनहित याचिका दाखिल की गई है। सुप्रीम कोर्ट इस याचिका पर गुरुवार को सुनवाई करेगा। याचिका में कहा गया है कि जिस तरह मुंबई पुलिस इस मामले से निपट रही है उससे पूरा देश हैरान है। भाजपा नेता और अधिवक्ता अजय अग्रवाल की इस याचिका पर प्रधान न्यायाधीश एसए बोबडे, जस्टिस एएस बोपन्ना और जस्टिस वी. रामासुब्रमणियन की पीठ सुनवाई करेगी।

इससे पहले शीर्ष अदालत ने 30 जुलाई और सात अगस्त को इसी तरह की जनहित याचिकाओं को खारिज कर दिया था, जिन्हें क्रमशः

अल्का प्रिया और मुंबई निवासी विधि छात्र द्विवेंद्र देवतादीन दुबे ने दायर किया था। अजय अग्रवाल ने शीर्ष अदालत में अतिरिक्त हलफनामा दाखिल करके कहा है कि मुंबई पुलिस की जांच के शुरूआती चरण में कई खामियां हैं। ये जानबूझकर की गई हैं या नहीं, यह भी जांच का विषय है। उनका कहना है कि महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री नारायण राणे जैसे जिम्मेदार व्यक्ति आरोप लगा रहे हैं कि यह स्पष्ट तौर पर हत्या का मामला है।

उधर, राकांपा सुप्रीमों शरद पवार ने सुशांत मामले की सीबीआइ से जांच कराने का विरोध नहीं करने की बात कही है। उन?होंने कहा है कि मैंने पिछले 50 वर्षों से महाराष्ट्र और मुंबई पुलिस को देखा है। मुझे मुंबई पुलिस पर भरोसा है। मैं इस पर कोई टिप्पणी नहीं करना चाहता कि दूसरे लोगों ने मुंबई पुलिस पर क्या आरोप लगाए हैं। यदि किसी को लगता है कि उइक या किसी अन्य एजेंसी को मामले की जांच करनी चाहिए तो मैं इसका विरोध नहीं करूंगा। राकांपा प्रमुख की इस प्रतिक्रिया से शिवसेना को करारा झटका लगा है जो सीबीआइ जांच का विरोध कर रही है। उधर, अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत के केस में रिया चक्रवर्ती के केस स्थानांतरित करने की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट जल्द अपना फैसला सुना सकता है। मंगलवार को रिया चक्रवर्ती की ओर से श्याम दीवान, महाराष्ट्र सरकार की ओर से अभिषेक मनु सिंघवी, बिहार सरकार की ओर से मनिंदर सिंह और भारत सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अपने-अपने पक्ष रखे थे। भारत सरकार की ओर से पेश हुए सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट में अपनी दलील में कहा था कि सच सामने आना चाहिए और इसके लिए एक निष्पक्ष जांच की जरूरत है।

नई शिक्षा नीति के तहत 300 से अधिक कालेजों को संबद्ध नहीं कर पाएंगे विश्वविद्यालय : निशंक

नई दिल्ली, पीटीआइ। केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक ने कहा कि नई शिक्षा नीति के तहत भारत में विश्वविद्यालय 300 से अधिक कालेजों को संबद्ध नहीं कर पाएंगे। ऐसा कालेजों को अधिक स्वायत्तता देने के लिए किया जा रहा है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री निशंक ने बुधवार को कहा कि वह हाल ही में एक विश्वविद्यालय में गए थे और जब उन्होंने कुलपति से पूछा कि उनके विश्वविद्यालय से कितने कालेज संबद्ध हैं। उन्होंने जवाब में बताया कि 800 कालेज संबद्ध हैं।

केंद्रीय मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि मुझे लगा कि मैंने कुछ गलत सुन लिया है। इस पर जब मैंने उनसे दोबारा पूछा तो उन्होंने फिर वही जवाब दिया लेकिन जब कुलपति से पूछा गया कि क्या वह इन सभी कालेजों के प्राचार्यों के नाम जानते हैं? निशंक उस विश्वविद्यालय में छात्रों को डिग्री प्रदान करने गए थे। निशंक ने कहा कि वह इस बात से चकित थे और उन्हें लगा कि कुलपति को इन 800 कालेजों के प्राचार्य के नाम कैसे याद होंगे। उन्होंने कहा कि क्या किसी भी कुलपति के लिए यह संभव होगा कि वह सभी कालेजों के प्राचार्यों के नाम याद रख सकेंगे। क्या वह इन सभी सदस्य कालेजों की गुणवत्ता और कार्यप्रणाली पर नजर रख पाएंगे। इसीलिए नई शिक्षा नीति के तहत एक विश्वविद्यालय में 300 से अधिक कालेज संबद्ध नहीं हो सकेंगे। उन्होंने कहा कि ऐसे में अगर विश्वविद्यालयों की संख्या बढ़ानी पड़ी तो वह भी किया जाएगा।

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि पिछले 15 वर्षों के इंतजार के बाद सामने आई नई शिक्षा नीति के तहत चरणबद्ध तरीके से कालेजों को अधिक स्वायत्तता दी जाएगी। इस बीच मंत्रालय से जुड़े सूत्रों ने बताया कि मौजूदा समय में जब सब कुछ खुल गया है तो स्कूलों को भी सेफ्टी गाइडलाइन के साथ शुरू किया जा सकता है। अभी जो प्रस्तावित योजना है, उनमें दसवीं और बारहवीं के बच्चों को पहले बुलाया जाएगा। जिन्हें रोटेशन के अनुसार हफ्ते में दो से तीन दिन ही स्कूल आना होगा।

कोरोना वैक्सीन डिलीवरी के लिए एक्सपर्ट ग्रुप की बैठक

नई दिल्ली, एएनआइ। कोरोना वैक्सीन पर बने एक्सपर्ट ग्रुप ने बुधवार को पहली बैठक की। कोरोना वैक्सीन उपलब्ध कराने और उसकी डिलीवरी के लिए तंत्र (मैकनिज्म) बनाने पर चर्चा हुई। नीति आयोग के सदस्य डॉक्टर वीके पॉल की अध्यक्षता में बैठक हुई।

बता दें कि रूस द्वारा वैक्सीन बना लेने की घोषणा के बाद यह बैठक हो रही। ऐसे में यह बैठक काफी अहम बताई जा रही है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च के अनुसार, इस समय भारत में तीन टीकों का अलग-अलग चरणों में क्लीनिकल ट्रायल चल रहा है। ये तीन टीके

भारत बायोटेक वैक्सीन, जाइडस कैडिला और ऑक्सफोर्ड वैक्सीन है।

आईसीएमआर के महानिदेशक डॉ. बलराम भार्गव के अनुसार, भारत बायोटेक और जाइडस कैडिलाका कोरोना वैक्सीन के फेज 1 का ट्रायल पूरा कर चुके हैं और फेज 2 का ट्रायल जल्द शुरू करने वाले हैं। वहीं ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी की वैक्सीन को सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया बना रहा है। इसे फेज 2 और फेज 3 के ट्रायल का अनुमति मिल गई है, जो 17 जगहों पर हफ्ते भर में शुरू होगा। सीरम ने भारत और कम व मध्यम आय वाले देशों के लिए 10 करोड़ कोरोना वैक्सीन तैयार करने की बात कही है। कंपनी ने कहा कि उसके वैक्सीन की एक खुराक की कीमत तीन डॉलर (लगभग 225 रुपये) होगी। इसके लिए उसने गवी वैक्सीन संगठन और बिल व मिलिंडा गेट्स फाउंडेशन के साथ करार किया है।

पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की हालत में सुधार नहीं, आइसीयू में भर्ती

नई दिल्ली, जेएनएन। पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी की हालत गंभीर बनी हुई है। वे धौला कुआं स्थित आर्मी आरआर (रिसर्च एंड रेफरल) अस्पताल की आइसीयू में भर्ती हैं। अस्पताल के मुताबिक, शरीर में रक्त का संचार बना हुआ है, लेकिन हालत में सुधार नहीं हुआ है। वे अभी वेंटीलेटर पर हैं। बता दें कि भारत रत्न से सम्मानित 84 वर्षीय प्रणब मुखर्जी को मस्तिष्क में खून का थक्का जमने के कारण 10 अगस्त को दोपहर

12:07 बजे आर्मी अस्पताल में भर्ती किया गया था। यहां उनके मस्तिष्क का ऑपरेशन होना था। उनके मस्तिष्क में थक्का जम गया था। इसी को निकालने के लिए ऑपरेशन किया गया। फिलहाल उनकी हालत 'हीमोडायनामिकली' स्थिर है। उनका इलाज कर रहे डॉक्टरों ने बताया कि मंगलवार को उनकी तबीयत बिगड़ गई थी। तबसे उनमें सुधार के लक्षण नहीं दिखाई दे रहे हैं। इससे पहले कोरोना की जांच की गई। इसमें संक्रमण की पुष्टि हुई। इसके बाद ऑपरेशन किया गया। ऑपरेशन के बाद से ही उनकी हालत गंभीर बनी हुई है।

नैनी जेल में फिर मिले चार कोरोना पॉजिटिव

नैनी। केंद्रीय कारागार नैनी में बंद चार बंदियों में कोरोना के लक्षण मिलने पर सभी को कोटवा स्थित अस्पताल में दाखिल कराया गया है। बता दें कि केंद्रीय कारागार नैनी में बंद 24 बंदियों व अट्ठारह कर्मचारियों की जांच पड़ताल की गई थी। बुधवार को चार बंदियों की रिपोर्ट कोरोना पॉजिटिव आने पर जेल प्रशासन ने सभी बंदियों को स्वास्थ्य विभाग की मदद से कोटवा स्थित अस्पताल में दाखिल कराया है।

एयर इंडिया का बड़ा फैसला, पांच देशों में बंद करेगी अपना कार्यालय

नई दिल्ली, एएनआइ। कोरोना संकट को ध्यान में रखते हुए एयर इंडिया ने पांच देशों में अपने स्टेशन बंद कर दिए हैं। समाचार एजेंसी एएनआइ के मुताबिक, एयर इंडिया ने डेनमार्क की राजधानी कोपनहेगन, स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम, स्पेन की राजधानी मैड्रिड, मिलान (इटली) और वियाना (पॉर्चूगल) में अपने ऑफिस बंद करने का फैसला किया है। एयर इंडिया स्थानीय वकीलों से रायशुमारी के बाद इन कार्यालयों को बंद करने पर काम करेगा। ऐसे में जब कोरोना संकट के चलते अंतरराष्ट्रीय उड़ानें शुरू नहीं हो पाई हैं, एयर इंडिया की

ओर से उठाया गया यह बड़ा कदम माना जा रहा है।

सूत्रों का कहना है कि एयर इंडिया के जो कर्मचारी वहां काम कर रहे हैं उन्हें वापस बुलाया जा रहा है। कोरोना संकट से पहले इन शहरों के लिए एयर इंडिया की फ्लाइटें उड़ान भरती रही हैं। इस फैसले को देखते हुए ऐसा भी लग रहा है कि आने वाले कई महीनों तक हवाई सेवाओं पर संकट बरकरार रहेगा। उल्लेखनीय है कि कोरोना संकट के कारण 23 मार्च से ही अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर रोक लग चुकी है। हालांकि जो भारतीय इस संकट के चलते विदेशों में जहां तहां फंस गए हैं उन्हें लाने के लिए सरकार की विशेष अनुमति से बंदे भारत के तहत हवाई सेवाएं जारी हैं।

बीते दिनों कोरोना संक्रमण के बढ़ते मामलों को देखते हुए केंद्र सरकार ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर लगी हुई रोक को अगले एक महीने के लिए बढ़ा दिया था। अनलॉक-3 की गाइडलाइन में अंतरराष्ट्रीय उड़ानों पर लगी रोक को सरकार ने बढ़ाकर 31 अगस्त तक कर दिया था। हालांकि यह रोक सिर्फ यात्री उड़ानों पर ही लागू रहेगी। मालवाहक विमान (कार्गो सर्विस) जारी रहेंगी। इसके अलावा केंद्र सरकार के वंदे भारत मिशन के तहत चल रही उड़ानें और डीजीसीए से इजाजत लेने वाली विशेष उड़ानें भी जारी रहेंगी। इस सेवा के तहत दुबई से आ रहा एयर इंडिया एक्सप्रेस का विमान केरल के कोझिकोड में हादसे का शिकार हो गया था।

ग्रामीण अंचल

प्रयागराज गुरूवार, 13 अगस्त, 2020

संक्षेप समाचार

तहसील से राजस्वकर्मी की बाइक चोरी

करछना। मंगलवार को तहसील करछना परिसर से उच्चको ने राजस्वकर्मी की बाइक उडा दी। जानकारी के अनुसार तहसील में तैनात कानूनगो बैजनाथ तिवारी सुबह तहसील परिसर मे रोज की तरह बाइक खडी करके तहसील के दूसरी मजिल पर बने आफिस मे काम करने चले गये। इस बीच किसी ने मौका पाकर उनकी मोटरसाइकिल पार कर दी। भुक्तभोगी जब वापस बाइक के पास आया तो बाइक नदारद थी तहसील कैपस में काफी खोजबीन के बाद बाइक न मिलने पर पीड़ित ने करछना थाने मे अज्ञात के खिलाफ तहरीर दी है। आये दिन तहसील परिसर में बाइक व साइकिल चोरी की घटना आम हो गयी है जिसको लेकर पूरे तहसील परिसर में सीसीटीवी कैमरा लगवाये जाने की मांग की गयी है।

कृष्ण जन्माष्टमी पर मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन

हण्डिया। हण्डिया थाना क्षेत्र के उपरदहा गांव में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर गांव के युवाओं ने मिलकर मटकी फोड़ प्रतियोगिता का आयोजन किया। मटकी लगभग जमीन से 20 फीट के ऊपर बांधी गई जो दही से भरी हुई थी। युवा एक के ऊपर एक चढ़कर बहुत ही मसक्कत के बाद दही से भरी मटकी तक पहुंचे। वहीं मटकी फोड़ कर धमाल मचा दिया। एक ऊपर एक चढ़े लोग अचानक मटकी फूटते ही एक दूसरे पर गिरे। यह दृश्य देखकर लोग दांतो तले अंगुलियां दबाते हुए कृष्ण जन्माष्टमी मनाया। फिर हाल युवाओं का यह प्रतियोगिता आकर्षण का केंद्र बना रहा। प्रतियोगिता में इग्लास चौहान, बाबा चौहान, सोनू चौहान, सूरज, अनिल, अशोक बिंद, विमल सिंह, पुजारी, अनिल, उमेश, राजा अर्जुन राजकुमार इस आवसर पर मुख्य अतिथि अमित कुमार बिन्द आदि दर्जनों से ज्यादा युवाओं ने भाग लिया फिलहाल क्षेत्र में कृष्ण जन्माष्टमी कोविड-19 को लेकर इस बार लोगी में रुचि नहीं देखने को मिला।

विभिन्न मन्दिरों एवं गांवों में बांटे गये मिष्ठान एवं फल

करमा । घूरपुर बाजार सहित क्षेत्र के सेमरा, बोंगी, मनकवार, मिठाई लाल का पूरा, दसई बंधवा आदि गाँवों में जन्माष्टमी का पर्व पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । क्षेत्र के विभिन्न आयोजनों में घूरपुर व्यापार मंडल अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार पटेल नें शिरकत करतें हुए लोगों में फल , मिष्ठान के साथ मन्दिरों के आयोजन पर आर्थिक सहयोग प्रदान किये । सुरेंद्र कुमार के उक्त कार्य से लोगों में काफी खुशी का महौल हैं ।

मटकी फोड़ते युवक

नमाज पढ़कर घर जा रहे शिक्षक को डंपर ने मारी टक्कर, मौत

जसरा। जसरा मस्जिद से नमाज पढ़ करके घर जा रहे शिक्षक को पीठ से तेज गति से आ रही डंपर ने टक्कर मारी शिक्षक की मौके पर ही मौत हो गई । ट्रक को गांव वालों ने टोल प्लाजा पर पकड़ा। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। अमरेहा गांव निवासी शकील अहमद पुत्र मुन्ने जो कि लोहगरा गांव में प्राथमिक पाठशाला में बतौर शिक्षक कार्यरत थे। आज वह अपने घर अमरेहा से बूंदावा मंडी समिति के सामने स्थित मस्जिद में शाम आठ बजे नमाज पढ़ने गए थे। नमाज पढ़ करके वह कुछ देर दोस्तों के साथ बैठे थे इसी बीच में उनके घर से फोन गया कि फोन घर पहुंचा दीजिए लड़के को ऑनलाइन पढ़ाई करनी है। फोन आते ही वह जल्दी जल्दी घर की ओर जा रहे थे कि मंडी समिति के गेट के सामने पीछे से तेज गति अनियंत्रित डंपर ने सीधे उनको टक्कर मार दिया। जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। भागते हुए डंपर को गांव वालों ने टोल प्लाजा पर पकड़ कर के पुलिस के हवाले कर दिया । पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर के पोस्टमार्टम के लिए प्रयागराज भेज दिया है।

मृतक की फाइल फोटो

गायब युवक का पर्स नहर की पटरी पर व बाइक मिर्जामुराद में मिला

मऊआइमा। घर से ननिहाल के लिए बाइक से निकला युवक का सात दिनों से कुछ पता न चलने से युवक की माता ने मऊआइमा थाने में गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज कराई है । बाद में रहस्यमय ढंग से गायब युवक का पर्स नहर के पास मिला तथा दो दिन बाद बाइक मिजार्मुराद थाना क्षेत्र में मिलने से परिजन किन्हीं अनहोनी से सहमे हुए हैं । मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम मलखानपुर निवासी संतोष कुमार यादव 27 वर्ष पुत्र रामलखन 4 अगस्त को परिजनों से बोला कि वह बाइक लेकर प्रतापगढ़ के थाना मान्धाता के ग्राम गुणुरुआ रामपुर नानी के घर जा रहा है । परन्तु संतोष कुमार 27 वर्ष न नानी के घर पहुंचा न ही घर आया तो संतोष कुमार यादव की माता लखपति देवी ने मऊआइमा थाने में 6 अगस्त को गुमशुदगी रिपोर्ट दर्ज करा दी । उसके बाद परिजन संतोष कुमार की तलाश में लग गए तो संतोष का पर्स दुबाही नहर की पटरी पर मिला । फिर दूसरे दिन वाराणसी के थाना मिजार्मुराद से बाइक पुलिस ने बरामद कर ली । परन्तु अभी तक संतोष कुमार का कहीं कुछ भी पता न चलने से परिजन किन्हीं अनहोनी से सहमे हुए हैं।

घरों में धूमधाम से मनायी गई कृष्ण जन्माष्टमी

लालापुर। श्री कृष्ण जन्मोत्सव क्षेत्र के रामजानकी मॅदिर, लालापुर, मझियारी, गोइसरा में द्वरकाधीश क्लीनिक अमिलिया, मझियारी राम जानकी, चंद्रनिधान पाण्डेय घर पर ही सोशल डिस्टेंसिंग का ख्याल रखते हुए मनाया गया। शाम होते ही पूजा-पाठ का दौर शुरू हो गया। रात 12 बजे विशेष पूजा के बाद श्री कृष्ण जन्माष्टमी जन्मोत्सव संपन्न हो गया। कोरोना काल के चलते अधिकतर लोगों ने अपने अपने घरों में ही श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया। इस वर्ष जन्माष्टमी का पर्व दो दिन मनाया जा रहा है। पंचांगों के अनुसार श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का दो दिन योग है। 12 अगस्त बुधवार को साधु संत श्री कृष्णा जन्मोत्सव मनाएंगे। कोरोना महामारी के चलते इस वर्ष मंदिरों में भीड़ नहीं देखी गई। लोगों ने अपने परिवार के बीच श्री कृष्ण जन्मोत्सव मनाया। जन्माष्टमी को लेकर बच्चों में भारी उत्साह देखा गया। बच्चे घर में ही श्री कृष्णा व राधा के परिधान में दिखे। इस बार जन्माष्टमी एक विशेष योग के बीच मनाया जा रहा है। जिन लोगों ने कृष्ण जन्माष्टमी व्रत किया है, उन्हें विशेष फल की प्राप्ति होने की संभावना है। इस संबंध में पंडित संस्थापक राम कृष्ण ने बताया कि विशेष योग होने के कारण जन्माष्टमी बड़ा ही फलदाई है। उन्होंने कहा कि जो इस व्रत को करते हैं भगवान उन्हें कभी भारी कष्ट नहीं पहुंचाते। श्री कृष्ण ही ऐसे देवता है, जो हर जगह विराजमान है। कृष्ण की आराधना करने से घर के आसपास भी दुख नहीं फटकता।

राधा कृष्ण का सजा मंदिर

श्रीकृष्ण का किरदार निभाता बच्चा

जन्माष्टमी पर बेटियों नें चलाया जागरुकता अभियान

करमा। इस वर्ष जन्माष्टमी मनाने का अंदाज कुछ अलग ही नजर परम्परागत भगवान श्री कृष्ण के पूजन के साथ - साथ पर्यावरण , बेटी बचाओं - बेटी पढ़ाओ इत्यादि सामाजिक आयोजनों की भी धूम रही इस वर्ष जन्माष्टमी पर विभिन्न जगहों पर वृक्षारोपण के साथ बेटी बचाओं -बेटी पढ़ाओ अभियान चलाकर लोगों को जागरुक किया गया । चाका ब्लाक स्थित ददरी गाँव में बेटियों नें नारी शिक्षा , नारी जागरूकता के पोस्टर बांटे ।स्नातक तृतीय वर्ष की छात्रा आरती पटेल एवम इंटर प्रथम वर्ष की छात्रा अनामिका पटेल नें संयुक्त रूप से बेटी बचाओं -बेटी पढ़ाओ अभियान पर लोगों को जागरूक की ।हाईस्कूल के छात्र प्रदीप कुमार नें वृक्षारोपण के प्रति अभियान चलाकर ग्रामीणों में जागरुकता का प्रसार किया । उक्त जन्माष्टमी एवम जागरूकता कार्यक्रम में सत्य प्रकाश पटेल, चंद्र प्रकाश पटेल, विमल चंद्र पटेल, संदीप पटेल, राहुल पटेल, सुरेश पटेल, रामलगन सिंह पटेल, राममोहन पाल, बाल गोविंद पाल सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित रहें ।

बेटी बचाओं-बेटी पढ़ाओ अभियान पर लोगों को जागरुक करतें हुए

करछना में जन्माष्टमी की रही धूम

करछना। भादपद्र की अष्टमी पर मंगलवार को करछना क्षेत्र मे कृष्ण जन्माष्टमी की धूम रही इस मौके पर देर रात जन्म के बाद आयोजक मण्डल की ओर से प्रसाद वितरण किया गया। करछना थाना परिसर समेत क्षेत्र के बरदहाए कौवा बरांवए घटवाए कटकाए चनैनीए पचदेवराए साधूकुटी आदि गांवो मे भी कृष्ण जन्माष्टमी की धूम रही। देररात तक भजन कीर्तन के साथ सोहर जैसे मांगलिक गीतो के साथ भक्तो का जमावडा लगा रहा। भजन गायक राजीव सिंह व दीपू सिंह ने अपनी प्रस्तुतियो से देर रात तक खूब समा बाधी। आयोजको की ओर से भक्तो मे प्रसाद वितरण करते हुए सुख समृद्धि की कामना की। वहीं ज्यादातर जगह बुधवार को भी जन्माष्टमी का आयोजन किया गया है जहां भक्तों ने देर शाम तक झांकियां सजाते रहे।

बच्चों की प्रतिभा को देखकर आत्मविभोर हुए लोग

करमा । मंगलवार को जन्माष्टमी का पावन पर्व पूरे श्रद्धा एवम हर्षोल्लास के साथ मनाया गया क्षेत्र के चनैनी गाँव में वरिष्ठ समाजसेवी श्री आशीष शुक्ल के नेतृत्व में आयोजित श्रीकृष्ण जन्माष्टमी चर्चा का केन्द्र बिंदु रहा उक्त कार्यक्रम में श्री कृष्ण के बालहठ , मुरली वादन , माखन चुराने आदि दृश्य को देखकर लोग आत्मविभोर हों गये । बच्चों द्वारा अनूठी कलात्मक अंदाज को देखकर लोगों में आनन्द एवम उत्साह की लहर छा गयी । कार्यक्रम के अंत में सभी दर्शकों एवम श्रद्धालुओं को प्रसाद एवम मिष्ठान वितरित किया गया। सभी दर्शकों नें कार्यक्रम आयोजक श्री शुक्ल को के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किये। उक्त कार्यक्रम कोविड -19की वजह सामाजिक दूरी का भी ध्यान रखा गया।

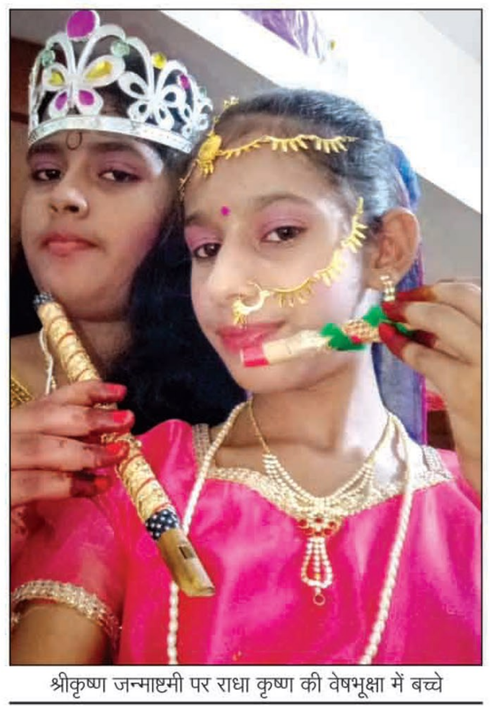

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर राधा कृष्ण की वेषभूक्षा में बच्चे

झमाझम हुई बारिश से किसानों के चेहरे खिले

करछना। जुलाई से अगस्त के बीच में कम बारिश के चलते जहां एक ओर किसानो में मायूसी थी वही पखवारे बाद मगलवार से रूक.रूककर हो रही बारिश से जहां एक तरफ फसलो को बारिश का पानी जीवनदान साबित हो रही है वही किसानो के चेहरे पर रौनक दिखाई दे रही है। जून जुलाई से अब तक हुई बादलो की बेरूखी से जमुनापार के अधिकांश क्षेत्रो मे बहुत कम बारिश हुई जिससे धान की फसलो पर बुरा असर पड रहा था। किसान नलकूप और नहरो के सहारे अपनी धान की फसल को बचाने में रात दिन एक कर दिए थे। बारिश न होने के कारण एक ओर जहा फसले सूख रही थी और मानव जीवन पर इसका प्रभाव पड रहा था और गर्मी से लोग बेहाल थे दो दिन से रूक रूककर हो रही बारिश से फसलो जीवनदान मिला वही किसानों के चेहरे बारिश देखकर खिल उठे।

बारिश से गिरा कच्चा घर, गरीब हुआ बेघर

लालापुर। लालापुर क्षेत्र के ओझा पट्टी मानपुर में बारिश ने ऐसा कहर बरपाया कि एक गरीब परिवार बेघर हो गया।जानकारी के अनुसार इंद्रपाल पुत्र रामकिशोर निवासी ओझापट्टी का बुधवार को भारी बारिश के चलते माकान गिर गया और खुले आसमान में रहने को मजबूर हैं गरीब परिवार जिससे गरीब परिवार बेघर हो गया।इंद्रपाल व उसकी पत्नी अपने दो बेटा और दो बेटियों के साथ बिना घर के खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर है।लाकडाउन व कोरोना माहमारी के चलते गरीब परिवारों का बुरा हाल है। शासन प्रशासन के तरफ से कोई भी मदद नहीं मिल रही है। इंद्रपाल ने बताया कि लाकडाउन के चलते कोई काम धाम भी नही मिल रहा है, परिवार का पालन पोषण करने में दिक्कत होती है,किसी तरह गुजारा हो रहा था कि बारिश के कारण घर भी गिर गया, अब तो वही हाल है कि 'रहने को घर नहीं ।

बारिश से गिरा कच्चा मकान व परिवार

कोरोना संक्रमण पर किसी भी तरह की लापरवाही समाज को बबार्दी के कगार पर ला सकती हैं : जकी उबेद खान

करमा । कोविड -19से उपजे हालात की वजह से आज संपूर्ण विश्व में त्राहि -त्राहि मची हैं देश में अनेकों लोगों को रोजगार आदि से हाथ धोना पड़ा वर्तमान समय में संयम एवम सावधानी ही जीवन का मूल अस्त्र हैं इसलिए सभी व्यापारी भाइयों से सादर आग्रह हैं कि आप खुद बचें एवम अपनों को बचायें उक्त बातें एन.के. प्रिण्टर्स के प्रबंधक एवम अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल नगर उपाध्यक्ष जकी उबेद खान व्यापारी नेता, जीरो रोड नें मंगलवार को वर्चुअल मीटिंग के माध्यम से करमा आदि के व्यापारियों के संबोधन में कही आगे श्री उबेद खान नें यह भी कहा कि कोविड -19पर किसी भी तरह की लापरवाही स्वयं को एवम समाज को बबार्दी के कागार पर ला खड़ी कर सकती हैं इसलिए सभी लोग धैर्यवान बनें रहें इसके साथ शासन एवम प्रशासन का सहयोग करतें हुए स्वयं भी संक्रमित होनें से बचें एवम अपनों को भी बचायें ।श्री खान शहर के बड़े प्रिंटिंग प्रेस मालिकों में से एक हैं जिनका जनपद के व्यापारियों एवम आम लोगों में बहुत सम्मान हैं ।

हाईकोर्ट समाचार

देवरिया जिला पंचायत की भूमि से बेदखली के खिलाफ याचिका दाखिल

प्रयागराज। अर्जेन्ट मुकदमों की सुनवाई के लिए बुधवार को देवरिया के दो मामले में चीफ जस्टिस की बेंच बैठी। बेंच ने कल इन दोनों केसों की सुनवाई करने को कहा है। ये दोनों केस जिला पंचायत देवरिया की स्वत्व वाली सम्पत्ति पर विधि विरूद्ध तरीके से बतौर अतिचारी कथित अवैध कब्जा को लेकर है। अपर मुख्य अधिकारी जिला पंचायत देवरिया ने 24 जुलाई 2020 को आदेश पारित कर याचीगणों को वहां से अपना सामान हटाकर अन्यत्र जाने का 15 दिन का समय दिया है। जिला पंचायत देवरिया के अपर मुख्य अधिकारी द्वारा पारित आदेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी गयी है। याचिका कृष्ण मुरारी वर्मा व अन्य की तरफ से दायर की गई है। याचिका में जिला पंचायत देवरिया के 24 जुलाई 20 के आदेश को रद्द करने की मांग की गयी है। यह भी मांग की गयी है कि याचीगण को प्लाट नम्बर 290 व 291 पर निर्मित उनके आवास से बेदखल न किया जाय। याचिका अनुसार विवादित स्थल मोहल्ला बाँस देवरिया, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड कम्पाउन्ड में स्थित है। कहा गया है कि कानूनी प्रक्रिया अपनाए वगैर उन्हें उनके कब्जा से बेदखल न किया जाय। कहा गया है कि एक अप्रैल 1937 में याचीगण के पूर्वजों के साथ संपादित लीज डीड के अनुसार विवादित स्थल का पट्टा 90 साल तक का है। 90 वर्ष की अवधि समाप्त हुए वगैर उन्हें बेदखल नहीं किया जा सकता है। कहा गया है कि याचीगण किराया भी देते चले आ रहे हैं और वह स्वीकार भी किया गया है। ऐसे में यह नहीं कहा जा सकता है कि याचीगण अवैध कब्जा किए हुए हैं। कहा गया है कि यह मान भी लिया जाए कि याचीगण अतिक्रमणी है, फिर भी उन्हें उस विवादित स्थल से कानूनी प्रक्रिया को अपनाते हुए ही हटाया जा सकता है और वह कानूनी प्रक्रिया रेग्युलर वाद है। बहरहाल, चीफ जस्टिस की बेंच 13 अगस्त को इन केसों की सुनवाई करेगी।

संगमनगरी का कुशलक्षेम लेना नही भूलती शिक्षिका श्याम लता

करमा । संगम की नगरी न केवल नदियों का मिलन हैं अपितु विभिन्न संस्कृतियों एवम साहित्यों का प्रमुख केन्द्र भी हैं कोई भी व्यक्ति एक बार यदि यहाँ रह लेता हैं तों आजीवन यही का हों जाता हैं वह दुनियाँ के किसी भी कोने में हों किन्तु उसके दिल में प्रयागराज की अमिट एवम अविस्मरणीय प्रयाग की छाप अवश्य रहेंगी उक्त बातें रामनगरी यानी अयोध्या में रहने वाली शिक्षिका श्याम लता के ऊपर चरितार्थ होती हैं । श्याम लता काफी समय तक कौंधियारा विकास खण्ड के नौगवां प्राथमिक विद्यालय में बतौर सहायक अध्यापिका के रूप में तैनात थी जिनका लगभग दो वर्ष पूर्व उनके गृहजनपद फैजाबाद जो अब अयोध्या के नाम से प्रसिद्ध हैं ।शिक्षिका श्याम लता को यह रहते हुए विद्यालय के बच्चों एवम स्थानीय लोगों से काफी लगाव हों गया था ।

बारिश से जलमग्न हुई करमा बाजार की गलियां, राहगीरों के लिए बनी चुनौती

करमा । पिछले दो दिनों से रुक-रूक हों रही बारिश से किसानों के चेहरे खिले हुए हैं तो वही अधिकांश लोगों चेहरे पर मायूसी के शिकन भी देखने को मिल रहा हैं अधिकांश लोगों के मकान कच्चे होनें से गिरने का संकट बन रहा हैं । करमा बाजार स्थित जल निवासी की समुचित व्यवस्था न होनें के कारण जलमग्न हों उठी हैं जिससे राहगीरों समेत स्थानीय लोगों को आने जानें में मुसीबतों का सामना करना पड़ रहा हैं । वहीं दूसरी ओर झमाझम बारिश से किसानों में खुशी की लहर देखी गयी। बारिश से धान के खेतों में पानी भरा गया जिससे किसानों के चेहरों पर खुशी की झलक देखने को मिली। किसानों ने बताया कि सिचाई न होने से धान की फसल सूखने के कगार पर थी। बारिश का पानी खेतो के लिए अमृत साबित हो रहा।

बुधवार को झमाझम बारिश से करमा बाजार की गलियों में भरा पानी

नालियों की सफाई न होने से जलजमाव

करछना। बरसात के दिन शुरू होते ही जलजमाव की समस्या आम हो गयी है। नालियों की सफाई न होने के कारण नालियां चोक हो गयी है। जिससे सड़कों पर जलजमाव की स्थिति बनी रहती है और बीमारियों को दावत दे रही है। क्षेत्र के बरांवए घटवाए हिन्दूपुरए पचदेवराए कौवाए भड़ेवराए सोनाई आदि गांवों में सड़क के किनारे बाजारों में बनायी गयी नालियां बरसात के पूर्व सफाई न होने से चोक है जिससे बरसात का पानी सड़क पर ही जमा रहा है। लोगो का कहना है कि सफाई कर्मी कभी गांव में दिखाई ही नही देते है जिससे सफाई कार्य नही हो पा रहा है।

प्रयागराज हलचल

संक्षेप समाचार

नहर में अज्ञात युवती की मिली लाश की हुई शिनाख्त

मऊआइमा। मंगलवार को शाम के समय दुबाही स्थित शारदा सहायक नहर के निकट एक अज्ञात युवती का शव पुलिस ने बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था । जिसकी शिनाख्त बुधवार को हुई । मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम दुबाही स्थित शारदा सहायक नहर के निकट एक दुर्गंध आती शव ग्रामीणों ने देख कर इसकी सूचना पुलिस को मंगलवार को शाम के समय दी थी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। बुधवार को सुबह युवती के परिजनों ने पोस्टमार्टम हाउस में जा कर शिनाख्त करने के बाद मऊआइमा थाने आए बताए कि अज्ञात युवती का नाम सरिता 21 वर्ष पुत्री सुरेश पटेल है । युवती के चाचा डाक्टर राम शरण पटेल ने बताया कि वह लोग ग्राम नन्दा का पुरवा पोस्ट खेमीपुर कोतवाली कुंडा प्रतापगढ़ के निवासी हैं। मृतका युवती के चाचा राम शरण पटेल के अनुसार सरिता पटेल 21 वर्ष अविवाहित थी। वह चार बहनों में सबसे छोटी थी। दस अगस्त को सरिता देवी घर से एक किलोमीटर दूरी पर स्थित शारदा सहायक नहर की पटरी पर अपना मोबाइल रख कर नहर में कूद गई थी। तब से उसका कुछ भी पता नहीं चला। बुधवार को मालूम पडा कि मऊआइमा में एक अज्ञात युवती की लाश मिली है। फिलहाल सरिता क्यों नहर में कूद कर जान दी। और नहर से बहते हुए मऊआइमा पहुंच गई। इस बाबत परिजनों ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिए।

अब उमरे प्रयागराज मंडल की ट्रेन बारिश में भी नहीं रुकेगी

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मण्डल द्वारा एकदिल - इटावा खंड का कार्य बीते पांच अगस्त को पूरा होने के साथ ही पनकी से अलीगढ़ तक की रेलवे लाइन में कुल 403 ट्रैक सेक्शनों पर ड्यूल डिटेक्शन की कमीशनिंग का कार्य पूरा हो गया है। अब पनकी से अलीगढ़ तक बारिश के मौसम में बरसात के कारण एएफटीसी ट्रैक फेल होने पर भी ट्रेनों का परिचालन बाधित नहीं होगा।

यह जानकारी जनसम्पर्क अधिकारी केशव त्रिपाठी ने देते हुए बताया कि उत्तर मध्य रेलवे प्रयागराज मण्डल के सिग्नल और दूरसंचार विभाग द्वारा त्वरित गति से वार्षिक लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास किया जा रहा है तथा कानपुर-इटावा खंड के एकदिल-इटावा खंड पर कुल तीस एएफटीसी ट्रैक सर्किट के साथ एमएसडीएसी ऐक्सल काउंटर का कमिशनिंग 05 अगस्त 2020 को किया गया है। सिस्टम में प्रत्येक ट्रैक के लिए दो एक्सल काउंटर हैं जो ऑटो-रीसेट सुविधा से सुसज्जित है। इसे विशेष परिस्थितियों में मैन्युअल रूप से री-सेट भी किया जा सकता है। वर्ष 2018 में 43.77 करोड़ का एक प्रमुख परियोजना कार्य ह्लउत्तर मध्य रेलवे-मल्टी सेक्सन डिजिटल एक्सल काउंटर, ड्यूल डिटेक्शन के लिएह्ल सिग्नल और टेलीकॉम विभाग को आवंटित किया गया था।

कोर मुख्यालय में स्वच्छता सप्ताह का शुभारम्भ

प्रयागराज। महाप्रबन्धक, केंद्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन कोर, प्रयागराज के कार्यालय एवं रेल विद्युतीकरण कॉलोनियों में स्वच्छता सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत दिनांक 13.08.2020 को स्वच्छ परिसर के तहत कार्यालय प्रांगण का विधिवत साफ-सफाई, दिनांक 14.08. 2020 को स्वच्छ नीर के तहत पानी की टंकियाँ, आरओ एवं वाटर कूलर की साफ.सफाई और दिनांक 16.08.2020 को जीपीओ, राजपुर एवं रामबाग रेलवे कॉलोनियों में स्वच्छता सप्ताह के अन्तर्गत सफाई अभियान चलाया जायगा।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर भजन सम्राट की भजनों पर मंत्रमुग्ध हुए लोग

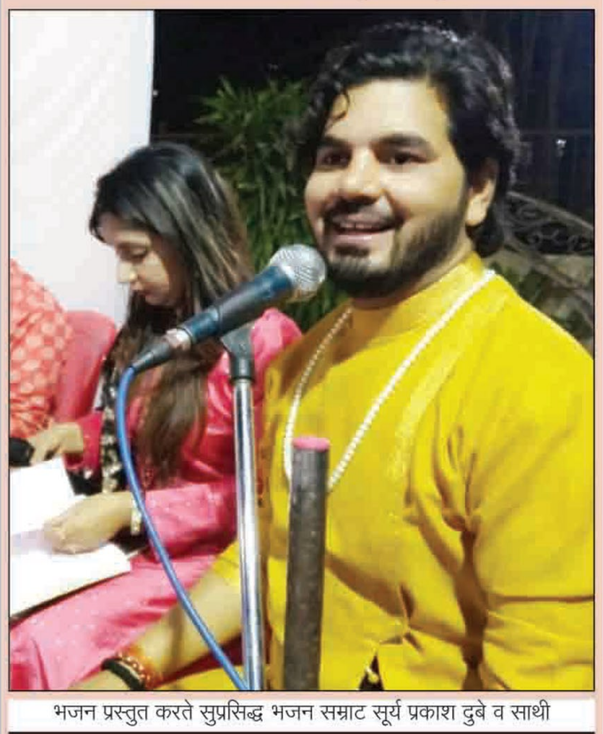

भजन प्रस्तुत करते सुप्रसिद्ध भजन सम्राट सूर्य प्रकाश दुबे व साथी

झूसी प्रयागराज। सुप्रसिद्ध भजन गायक और राधे रानी के आराधक सूर्य प्रकाश दुबे ने कृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव खूब धूम धाम से मनाया जिसके लाइव प्रसारण फेसबुक के माध्यम से करीब 5 हजार लोगो को जुड़े, अपनी पूरी टीम के साथ सूर्या जी ने एक से बढ़कर एक भजन प्रस्तुत किया जैसे हरे राम हरे रामा हरे कृष्ण हरे हरे कृष्णा,किशोरी कुछ ऐसा इंतजाम हो जाये। 'राधे रानी का साथ है तो डरने की क्या बात है' 'कृष्ण जन्म सुनी आई रे यसोदा मैया देदो बधाई' 'नंद घर आनंद भयो जै कन्हैया लाल की' 'मैया मोरी मैं नही माखन खायो जैसे तमाम भजन सुनाया कहा कि कोरोना ने जिंदगी खराब कर दी है। इस महामारी को ध्यान में रखते हुए ये ऑन लाइन का प्रोग्राम रखा गया है।। जिसके आयोजक समाज सेवी डॉक्टर बी के, कश्यप जी रहे। प्रयाग गौरव रत्न रहे। दुबे जी के कई कृष्ण भजन के एल्बम टी. सीरीज से आये है और आज उनका खुद राधे राधे बैंड है। जिसको रास्ट्रीय गौरव सम्मान प्राप्त है।

दबंगों ने युवक की की पिटाई बाइक को किया क्षतिग्रस्त

बरौत। हण्डिया थाना क्षेत्र के कसौधन लक्षागृह में दबंगों ने एक युवक की जमकर पिटाई कर दी तथा उसके भाभी के नाम से रजिस्टर्ड मोटरसाइकिल को तोड़ दिया। कसौधन लाक्षागृह गांव निवासी संदीप पाल जो अपने दुकान में खिड़की लगवा रहा था। आरोप है कि गांव के ही कुछ दबंग अचानक पहुंचे और युवक पर हमला कर दिया।वही युवक ने आरोप लगाया कि उसके भाभी के नाम से रजिस्टर्ड मोटरसाइकिल को दबंगों ने लाठी डंडे से पीट-पीटकर क्षतिग्रस्त कर डाला। जाते-जाते पीड़ित को जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गए। पीड़ित का आरोप है कि दंबग लोग खुलेआम मादक पदार्थों की बिक्री करते हैं । मादक पदार्थ बेचने वाले दंबगो को यह शंका है कि सुचना देता है। जिसको लेकर मारे है। वहीं सवाल यह उठता है कि क्या हल्का दरोगा और सिपाही को इस बात की जानकारी नहीं है। इसी हल्का में मिट्टी खनन, बालू खनन का खेल चल रहा है। क्या इस बात की जानकारी खनन बिभाग व स्थानीय पुलिस को नहीं है। एक तरफ लाक डाउन दुसरी तरफ मिट्टी खनन, बालू खनन,क्षेत्र में मादक पदार्थों की खुलेआम बिक्री । लोगों में चर्चा का विषय बना हुआ है। उच्चतम न्यायालय से लेकर जिले के तेजतर्रार इमानदार अधिकारियों के आदेश निर्देश को दर किनारे करके शासन के मंशा की खुलेआम धज्जियां उड़ाई जा रही है और खनन बिभाग ,स्थानीय पुलिस समेत आबकारी विभाग मौन क्यूं। यह जांच का विषय है। सन्दीप पाल ने थाने में नामजद तहरीर देकर दबंगों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। और पुलिस मामले की जांच में जुटी हुई है।

प्रतियोगी छात्र ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

प्रयागराज। जार्जटाउन थाना क्षेत्र के सोहबतियाबाग मोहल्ले में बुधवार दोपहर बाद एक प्रतियोगी छात्र ने कमरे के अन्दर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना पर सक्रिय हुई पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की।

जौनपुर जिले के बोड़ेपुर निवासी ओम प्रकाश पटेल (25वर्ष) पुत्र ज्ञान प्रकाश पटेल तैयारी करने के लिए अपने भाई के साथ जार्जटाउन के सोहबतियाबाग निवासी हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव के घर किराये का कमरा लेकर रहता था। बताया जा रहा है कि बुधवार दोपहर उसका भाई किसी काम से कमरे से बाहर गया था। वापस जब लौटा तो उसने

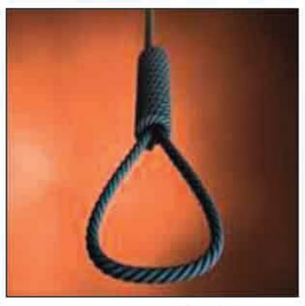

दरवाजा खटखटाया तो कोई आहट नहीं आई। आशंका होने पर उसने किसी तरह कमरे के अन्दर झांक कर देखा तो वह फांसी के फंदे पर लटकता हुआ दिखाई दिया। यह देखते ही उसने गृहस्वामी एवं पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। पुलिस कहना है कि वह तनाव की वजह से आत्महत्या की है। हालांकि उसके परिवार के अन्य सदस्य यहां नहीं पहुंचे है।

फांसी लगाकर युवक ने की आत्महत्या

प्रयागराज। मेजा थाना क्षेत्र के झींगुरपुर गांव में कतिपय कारणों से क्षुब्ध होकर एक युवक ने मंगलवार की रात फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बुधवार सुबह घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई की। मेजा के झींगुरपुर गांव निवासी अमित यादव (18वर्ष)पुत्र राम सिंह मंगलवार की रात घर के अन्दर अपने कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। बुधवार की सुबह परिवार के सदस्यों को जानकारी हुई तो पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव कब्जे में लेकर विधिक कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस कहना है कि परिवार के लोग यह नहीं बता सके कि उसने आत्महत्या क्यों किया।

पूर्व प्रधान पर लगा रंगदारी मांगने का आरोप

नैनी। औद्योगिक क्षेत्र स्थित एक पूर्व प्रधान व उसके पिता पर एक युवक ने रंगदारी मांगने का आरोप लगाते हुए पुलिस को तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। जानकारी के मुताबिक औद्योगिक क्षेत्र स्थित शांतिपुरम निवासी विनय कुमार यादव पुत्र रामसहादुर यादव बुधवार को पुलिस को तहरीर देकर बताया है कि वह अपना मकान बनवाने का कार्य कर रहे हैं। आरोप है कि क्षेत्र के एक पूर्व प्रधान व उनके पिता भुक्तभोगी से रंगदारी मांगने में लगे हुए हैं और रंगदारी न देने में अंजाम भुगतने की धमकी दी है। हालांकि पुलिस तहरीर लेकर मामले की जांच पड़ताल करने में जुटी हुई है। बताया जाता है कि दोनों पक्षों के बीच काफी समय से जमीनी विवाद का मामला चला आ रहा है और एक दूसरे के खिलाफ दोनों पक्ष संबंधित थानें पर तहरीर दे चुके हैं।

पतंजलि ऋषिकुल ने मनाया दसवां स्थापना दिवस

प्रयागराज। पतंजलि ऋषिकुल ने लॉकडॉउन के बावजूद अत्यंत उत्साह और ऊर्जा के साथ अपना दसवां स्थापना दिवस वेबीनार के माध्यम से बुधवार को मनाया। विद्यालय अपने दूरदर्शी संस्थापक अध्यक्ष लोकमणि लाल का ऋणी है, जिन्होंने विद्या एवं ज्ञान के प्रकाश स्तम्भ निर्माण की परिकल्पना की और इसकी पूर्ति के लिए अपने सभी प्रयासों को समर्पित करते रहे हैं।

इस अवसर पर छात्रों ने संवाद करने के डिजिटल माध्यम को लिया और गर्व से अपने शिक्षकों के साथ स्कूल गीत गाया। शिक्षकों ने छात्रों के साथ संवाद स्थापित करते हुए विद्यालय के विजन, मिशन एवं मोटो के बारे में आपस में चर्चा की जिसमें छात्रों को एक अच्छा नागरिक बनाकर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया। छात्रों ने सक्रिय रूप से जूम बैठकों के माध्यम से खुली चर्चा में भाग लिया उन्होंने अपने शिक्षकों के साथ राष्ट्र निर्माण में युवाओं के महत्व पर चर्चा की। उन्होंने उन मूल्यों और सद्गुणों को कायम रखने का वादा किया, जिनके लिए स्कूल खड़ा है और इसके लिए अथक प्रयास करता है। स्कूल की उपलब्धियों पर आधारित एक वीडियो भी छात्रों को दिखायी गयी।

पतंजलि विद्यालय समूह की सचिव प्रो. कृष्णा गुप्ता ने 9 साल की सेवा को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए स्कूल को बधाई दी। उन्होंने उपलब्धियों के लिए पतंजलि ऋषिकुल परिवार की सराहना करते हुए उज्जवल भविष्य की कामना की। अपनी उत्कर्ष यात्रा पर विद्यालय की प्रशंसा करते हुए प्रधानाचार्य नित्यानंद सिंह ने कहा कि किसी भी संस्था की सफलता उसके आपसी सहयोग, विश्वास और कर्मठता पर निर्भर करती है। उन्होंने यह विश्वास दिलाया कि पतंजलि ऋषिकुल, संस्थापक के विजन को साकार करते हुए निरंतर अच्छे मानव के निर्माण में अपनी शैक्षिक एवं सामाजिक दायित्वों का पालन करता रहेगा।

वेबीनार से स्थापना दिवस पर वेबिनार से जुड़े लोग

कोविड-19 से पीड़ित परिवारों को वितरित की गयी सामग्री

प्रयागराज। जनप्रिय सेवा संस्थान, प्रतापगढ़ एवं अलीगढ़ एलुमिनी एसोसिएशन वाशिंगटन डीसी (यूएसए) के संयुक्त तत्वावधान में इलाहाबाद (प्रयागराज) के नगर निगम क्षेत्र करैली में अल्पसंख्यक एवं गरीब लोग जो कि कोविड-19 के कारण अपनी रोजी रोटी खो चुके हैं के सहायतार्थ खाद्य सामग्री एवं अन्य संक्रमण से सुरक्षित रखने हेतु सामग्री 60 गरीब परिवारों को वितरित की गई । खाद्य सामग्री एवं अन्य सामग्री के पैक में 10 किलोग्राम चावल, 10 किलोग्राम आटा, 5 किलोग्राम अरहर की दाल, 5 किलोग्राम आलू, 2 किलोग्राम तेल, सब्जी मसाले, 2 किलोग्राम नमक, 5 पीस साबुन, सेनेटाइजर एवं मास्क शामिल था । संस्था के अध्यक्ष श्री अन्जर खान ने बताया कि यह राहत सामग्री अल्पसंख्यकों तथा गरीब मजदूरों को जो कि कोविड-19 के कारण अपनी रोजी रोटी खो चुके हैं के सहायतार्थ दी जा रही है।

युवक की हत्या में पड़ोसी समेत दो गिरफ्तार

प्रयागराज। शिवकुटी थाने की पुलिस ने 9 अगस्त की रात हुई युवक की हत्या मामले में बुधवार को तमंचा संग दो लोगों को गिरफ्तार किया। पुलिस अभियुक्तों के खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायालय भेज दिया। उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक नगर दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि पकड़े गए आरोपितों में शिवकुटी के कांशीराम आवास योजना निवासी दादा उर्फ विवेक कुमार गुप्ता पुत्र सुरेन्द्र कुमार और ननका पुत्र पन्नालाल है। पुलिस टीम ने विवेक कुमार के कब्जे एक तमंचा और एक कारतूस बरामद किया है। गौरतलब है कि शिवकुटी के कांशीराम आवास योजना निवासी राहुल (25) पुत्र भोदूंलाल 9 अगस्त की रात पड़ोसी ननका के घर में गोली लगने से मौत हो गई। मृतक के भाई की तहरीर पर पुलिस आरिफ, भवकाली, आकाश, दादा एवं ननका के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज करके जांच कर रही थी। पुलिस ने बुधवार को उक्त दोनों आरोपितों को गिरफ्तार करके विधिक कार्रवाई की। अन्य अपराधियों की तलाश में दबिस दे रही है।

पुलिस की गिरफ्त में हत्या के आरोपी युवक

नाबालिग बालिका के अपहरण के प्रयास का मुकदमा दर्ज

शंकरगढ। शंकरगढ़ क्षेत्र के करियाकला गांव निवासी केदार आदिवासी ने पुलिस को सूचना देकर आरोप लगाया है कि उनकी पुत्री विगत चार अगस्त को गांव के बाहर नहर पर शौच के लिए गई थी, उसी समय दो युवक बाइक से आये और उसे कुछ सुंघाकर जबरदस्ती बाइक में बैठा कर उठा ले गए। काफी खोजबीन करने पर पता चला कि मेरी पुत्री को मध्य प्रदेश के महतिया के जंगल की ओर ले गए हैं। ढूंढते हुए परिवार के लोग जब वहां पहुंचे तो हम लोगों को देखकर बदमाश बेटी व मोटरसाइकिल छोड़कर भाग गए। बेटी अचेत अवस्था में पाईं गई।परिजनों के मुताबिक घटना की सूचना अगले दिन देने थाने गए लेकिन हम लोगों को अपराधी पक्ष के लोगों ने जबरन धमकी देते हुए लौटा दिया। उसके बाद 11 अगस्त की शाम अपराधी पक्ष के आधा दर्जन लोग मेरे घर पर आए और जबरन समझौता पत्र पर हस्ताक्षर करने के लिए दबाव बना रहे थे।

अतुल मिश्रा उमरे में रेलवे भर्ती सेल के नए अध्यक्ष बने

प्रयागराज। अतुल कुमार मिश्रा ने उत्तर मध्य रेलवे में नए अध्यक्ष रेलवे भर्ती सेल का पदभार बुधवार को ग्रहण किया। यह पद पूर्व अध्यक्ष रेलवे भर्ती सेल विवेक प्रकाश के स्थानांतरण के कारण रिक्त हुआ था। श्री मिश्रा ने उत्तर मध्य रेलवे में उप मुख्य कार्मिक अधिकारी, वरिष्ठ मण्डल कार्मिक अधिकारी प्रयागराज मण्डल, मण्डल कार्मिक अधिकारी आगरा मण्डल, वरिष्ठ कार्मिक अधिकारी लोअर परेल मुंबई और रतलाम में सहायक कार्मिक अधिकारी जैसे महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवा प्रदान की है। उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग द्वारा दैनिक रूप से कार्यों में पारदर्शिता लाने का प्रयास किया। इसी क्रम में श्री मिश्रा ने उत्तर मध्य रेलवे में कम्प्यूटरीकृत पास प्रणाली की शुरूआत की। जिससे पास प्रणाली के कार्यों में तेजी और पारदर्शिता आई और पास के दुरुपयोग की संभावनाओं को समाप्त कर दिया है। उत्तर मध्य रेलवे में निराकरण प्रणाली की स्थापना के साथ-साथ आगरा और लोअर परेल में मिशन शून्य शिकायतों को शुरू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होने आईटी प्रणाली और वेब आधारित तरीकों के प्रयोग से भर्ती प्रक्रिया में लगने वाले समय को कम करने की बात कही। उन्होंने बताया कि वे उम्मीदवारों की किसी भी शिकायत को खुशी से सुनने और समय समय पर उसका निराकरण करना चाहेंगे। उन्होनें रेलवे की भर्ती परीक्षाओं के लिए कड़ी तैयारी कर रहे उम्मीदवारों को शुभकामनाएं दी।

जनता से वर्दी पहनकर वसूली करने वाला फर्जी सिपाही समेत दो गिरफ्तार

प्रयागराज। वर्दी पहनकर फर्जी सिपाही बनकर आमजनता से वसूली एवं धनउगाही करने वाले दो युवकों को नैनी कोतवाली पुलिस ने बुधवार को गिरफ्तार किया। दोनों युवकों के कब्जे से एक वर्दी एवं मोबाइल नम्बर और पांच सौ रूपए नगद बरामद किया। उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक चक्रेश मिश्र ने बताया कि आरोपित हरदोई जिले के लोनार थाना क्षेत्र के धौलापुर उधारनपुर गांव निवासी आशुतोष कुमार उर्फ आशु पुत्र रामशरण जनपद के मेजा के परानीपुर गांव में रहता है और इसका साथी औधोगिक थाना क्षेत्र के छरबना गांव निवासी राजा भैया पुत्र स्वर्गीय गंगाराम है। पुलिस टीम ने उसके कब्जे से एक मोटर साइकिल एवं एक वर्दी, मोबाइल और पांच सौ नगद रूपया बरामद किया है। उन्होंने बताया कि मंगलवार को शिकायत मिली कि एक सिपाही दो पक्षों में हुए विवाद को लेकर बुलाया और जबरन वसूली करने की नियत से अपने आवास पर रखे हुए है। मामले की जानकारी हुई तो जांच शुरू कर दी गई। हालांकि बाद में पता चला कि वह फर्जी सिपाही है।

माफिया अतीक की छह स्थानों पर स्थित करोड़ों की सम्पत्ति होगी जब्त

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करते हुए पुलिस ने अपराध जगत में आने के बाद अर्जित की गई कुल छह स्थानों की सम्पत्ति को जब्त करने के लिए नोटिस जारी किया है। पुलिस ने उक्त कार्रवाई गैगेस्टर अधिनियम के तहत किया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक अभिषेक दीक्षित के कार्यालय से जारी सूचना के मुताबिक पूर्व सांसद अतीक अहमद पुत्र स्वर्गीय हाजी फिरोज खुल्दाबाद के चकिया निवासी है। वर्तमान में वह गुजरात के अहमदाबाद जेल में बन्द है। इनके खिलाफ पूर्व विधायक स्व. राजूपाल हत्याकाण्ड समेत कई मुकदमा धूमनगंज थाने में दर्ज है। एसएसपी के निर्देश पर कार्रवाई करते हुए पुलिस ने चकिया स्थित उनके पैत्रिक आवास के अतिरिक्त अपराध से अर्जित की गई अचल सम्पत्ति खुल्दाबाद कर्बला मकान संख्या 39/6 बी, 40सी कर्बला, खुल्दाबाद में ही 95डी/ए/3 चकिया, सुल्तानपुर भावा में मकान संख्या 108ए और करेली के गौसनगर में केएम 41 और करेली के 205जी/8 करेली को जब्त करने के सम्बन्ध में पुलिस ने नोटिस जारी किया है। उक्त जानकारी देते हुए अपर पुलिस अधीक्षक दिनेश कुमार सिंह ने बताया कि अपराध एवं अपराधियों के खिलाफ शासन के मंशानुसार चलाए जा रहे अभियान के तहत अपराध जगत में आने के बाद अर्जित की गई सम्पत्तियों को जब्त करने की कार्रवाई की जाएगी। जिसके तहत अतीक के छह सम्पत्तियों में नोटिस लगाई गई है।

स्थापना दिवस पर ट्रिपल आईटी निदेशक ने छात्रों को दिये टिप्स

प्रयागराज। भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान, प्रयागराज के 22वें स्थापना दिवस पर बुधवार को वृक्षारोपण और परिसर के आवास में रह रहे परिवार के वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक प्रोफेसर पी. नागभूषण ने संस्थान को नई ऊंचाईयों पर ले जाने का संकल्प दोहराया और विद्यार्थियों को फॉमूर्ला ह्लअनंत के लिए योजना और आज के लिए कार्यह्ल के माध्यम से नींव मजबूत करने के लिए कहा।

उन्होंने विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा और कौशल के माध्यम से एक अभिनव भारत बनाने के लिए

स्थापना दिवस पर सम्मानित वरिष्ठजन व अन्य

प्रेरित किया। सभी लोगों को बधाई दी जिन्होंने पिछले वर्षों में ट्रिपल आईटी में योगदान दिया था। उन्होंने संस्थान की नींव को परिवार की तरह बताया। कहा हम आत्म-अनुशासित रहते हुए एकजुटता हमारी मूलभूत प्रतिबद्धता है। हमें अपने नींव का सम्मान करते रहना होगा। उन्होंने कहा कि हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने माता-पिता का विशेष ध्यान रखें। निदेशक ने कहा कि हम सभी छात्र, संकाय, कर्मचारी और अधिकारी इस वैश्विक महामारी में भी समय से आनलाइन परीक्षा कराना, समय पर परिणाम घोषित करना और नये सत्र की पढ़ाई जारी रखना एकजुटता का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि छात्रों के लिए ग्रीष्मकालीन सेमेस्टर हमेशा की तरह सारी शैक्षिक गतिविधियां आनलाइन के माध्यम से चल रही है।

प्रो. उमाशंकर तिवारी, अधिष्ठाता (मानव कल्याण) ने कहा कि आज के इस वैश्विक महामारी के समय सूचना प्रौद्योगिकी का महत्व और बढ़ गया है। हम लोग भले ही सामाजिक दूरी बना कर रह रहे हैं। इस अवसर पर संस्थान में कार्यरत संकाय सदस्य, अधिकारी व कर्मचारी जिनके माता-पिता साथ रह रहे हैं उनको निदेशक ने वस्त्र भेंटकर सम्मानित किया। साथ ही अशोक और आम का वृक्षारोपण किया। कार्यक्रम का संचालन डीन विद्यार्थी डॉ. विजय चैरसिया ने किया। इस अवसर पर प्रो. शिशुं वर्मा, कुलसचिव एवं प्रो. शेखर वर्मा डीन, जनसम्पर्क अधिकारी डॉ.पंकज मिश्रा प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

क्रियायोग सन्देश

प्रयागराज रविवार, 13 अगस्त, 2020

सच्ची राजनीति

वे सभी मानव जिनके चतुर्दिक विनम्रता ;च्व. सपजमदमेद्ध का आभामण्डल प्रकाशित रहता है, उन्हें पूज्य राजनीतिक महान व्यक्ति कहते हैं। विद्या के सिद्धान्त व दर्शन के अनुरूप जीवन जीने से मनुष्य में विनम्रता प्रकट होती है जिसके प्रभाव से मनुष्य संसार को स्वप्न के रूप में देखता है। दृश्य जगत का वास्तविक स्वरूप निराकार है। दृश्य जगत को मात्रा, आयतन व विविध रूप–रंग के रूप में समझना ही स्वप्न देखने की क्रिया है। मनुष्य अपने स्वरूप को वजन, लम्बाई, चौड़ाई व रूप–रंग के साथ व्यक्त करता है। यह अभिव्यक्ति स्वप्न का स्वरूप है। क्रियायोग ध्यान में मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप की अनुभूति करता है। मनुष्य का वास्तविक स्वरूप सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व परमानन्द है। जब मनुष्य अपने सच्चे स्वरूप की अनुभूति में रहता है तो वह विश्व की सभी रचनाओं के साथ शाश्वत् एकता की अनुभूति करता है। इस स्थिति में वह ब्रह्माण्ड की सभी रचनाओं की सच्ची सेवा करने की सामर्थ्य रखता है और वह निरन्तर परम शांति की अनुभूति में बना रहता है।

अशान्त मनुष्य आदतों के वशीभूत होकर जब क्षणिक सुख देने वाले सांसारिक इच्छाओं से संबंधित विचारों से प्रभावित होने पर वे मन और इन्द्रियों को वश में नहीं कर पाते हैं। सांसारिक विचार मन और इन्द्रिय को आहत कर उसे कमजोर बना देते हैं। ऐसे लोग अनेक प्रकार की शारीरिक और मानसिक बीमारियों से परेशान रहते हैं और उनके द्वारा राष्ट्र के बहुमुखी विकासशील कार्यक्रम दूषित और विकृत हो जाते हैं। सांसारिक वस्तुओं से लगातार संलिप्त रहने पर सामान्य मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम हो जाता है और निरन्तर इन्द्रिय जनित क्षणिक सुख के लिए कठिन दौड़ लगाता रहता है। मनुष्य का सच्चा जीवन प्रतिपल परमानन्द अनुभूति के लिए है जिसे इन्द्रियों के माध्यम् से नहीं प्राप्त किया जा सकता है। परमानन्द अनुभूति के लिए इन्द्रियातीत अनुभूति आवश्यक है। इन्द्रियों का वशीभूत मनुष्य अपने शरीर राष्ट्र को विकृत कर देता है और इसमें तरह–तरह की शारीरिक और मानसिक बीमारियॉ प्रकट हो जाती हैं। इस तरह के लोग सांसद और विधायक के रूप में राष्ट्र की सेवा नहीं कर सकते हैं।

समृद्ध और शान्ति संतृप्त राष्ट्र की स्थापना :

जिस समय राष्ट्र की जनता ''सच्चे धार्मिक सिद्धान्त ;अध्यात्म विज्ञानद्ध व नियम तथा राष्ट्र का संविधान दोनों एक हैं'', को एक करने में सफल होंगे उस समय राष्ट्र में शांति व बहुमुखी सम्पन्नता की स्थापना होगी।

जब तक आध्यात्मिक नियम व राष्ट्र का संविधान अलग–अलग रहेंगे तब तक राष्ट्र में शान्ति व समृद्धि संभव नहीं है। क्रियायोग ध्यान में सच की अनुभूति होने पर स्पष्ट हो जाता है कि आध्यात्मिक नियम और राष्ट्र का संविधान दोनों एक हैं। राष्ट्र की जनता को क्रियायोग ध्यान का अभ्यास करना चाहिए जिससे वे इस सच की अनुभूति कर सकें कि आध्यात्मिक नियमावली व संविधान दोनों एक होने चाहिए। इस स्थिति में राष्ट्र का प्रत्येक मनुष्य अपने अंदर व बाहर चतुर्दिक अहिंसा का वातावरण व वास्तविक स्वतंत्रता की अनुभूति करेगा। इस प्रकार के लोग राष्ट्र की संपदा को सुरक्षित करने में सक्षम होते हैं। राष्ट्र की संपदा का अभिप्राय मानव जाति, अन्य जीव–जन्तु, वनस्पतियॉ, समुद्र, पहाड़, नदी, झील, तालाब और पृथ्वी के समतल क्षेत्र से है। क्रियायोग ध्यान राष्ट्र में शान्ति व सर्वांगीण समृद्धि हेतु सम्यक् वातावरण प्रदान करता है। आध्यात्मिक धार्मिक सिद्धान्त व नियमावली में निहित शक्ति व ज्ञान मानव की विभिन्न सभ्यताओं को जोड़ने व मनुष्य को ब्रह्माण्ड के सभी रचनाओं से एकात्म अनुभूति कराता है। वह धर्म जो मानव के एक समुदाय वर्ग के द्वारा सम्मानित होता है उसे सम्प्रदाय कहते हैं। इस तरह के विभिन्न सम्प्रदाय मानव जाति के बीच में क्रियाशील हैं जिससे मानव–मानव के बीच दूरी दर्शाने वाली खाई और अधिक चौड़ी होती जा रही है। अब मनुष्य जाति को सच्चे अध्यात्म पोषित धार्मिक अनुशासन में रहने की आवश्यकता है जिससे आसानी से मनुष्य के विभिन्न सम्प्रदाय आपस में सत्य और अहिंसा की शक्ति द्वारा सम्यक् जुड़ सकेंगे और साथ ही साथ पृथ्वी पर सभी राष्ट्र आपस में एकता स्थापित करने में सफल होंगे।

क्रियायोग विज्ञान वह आध्यात्मिक शिक्षा है जिससे मानव व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास कम समय में सम्भव है। आज घर–घर व गली–गली में जिस नारे की आवश्यकता है वह नारा इस प्रकार है : ''क्रियायोग का विस्तार – राष्ट्र का निर्माण''

राष्ट्र निर्माण में लगे प्रत्येक व्यक्ति को क्रियायोग का पूरी भक्ति से अभ्यास करना चाहिए। इस स्थिति में राष्ट्र में शान्ति की स्थापना होगी और राष्ट्र का बहुमुखी विकास होगा।

True Politics

All those who are shining with the aura of politeness (विनम्रता) are called revered politicians. Politeness is cultivated within by practicing the philosophy and principle of vidya which brings the realization that all visible structures are dream in nature. The true nature of the visible universe is the formless Consciousness. Realization of forms with mass and volume is the dream nature of God. In Kriyayoga Meditation, we learn the method of scientific concentration on Self to realize the real nature of visible human form which is an Omnipresent, Omnipotent, Omniscient Consciousness, also known as God. In this state, a human realizes complete oneness with all creations. and is able to provide true services to all creations. In this state, a person realizes Eternal calmness.

The restless man who does not have control of senses and mind becomes the victim of temptations of material desires and is always guided by inner urges of past habit. Such persons suffer from various physical and mental disorders and pollute and distort multi-dimensional development of the nation. By constant indulgence in material substances, the ordinary person remains sense-ensnared. They always run for experiencing sense pleasures which yields only fleeting happiness. The real nature of human beings is to experience Bliss (ever-new joy) each moment which cannot be experienced through sense pleasures. For Bliss a person needs experiences beyond senses. The activities of such persons always distorts and ruins various fields of bodily nation and suffers from various illness of body and mind. Such persons cannot serve nation as a Member of Parliament (M.P.) or a Member of Legislative Assembly (M.L.A.).

Establishment of a Peaceful and Prosperous Nation

The moment the citizens of a country realize true religious principles (Spiritual Laws) and constitution of a nation as two separate entities, the nation cannot have peace and cannot be in a prosperous state. During Kriyayoga practice when human being experiences Truth they realize that spiritual rules and constitution of a nation are one. Citizens of nation should practice Kriyayoga meditation to experience the Truth that Spiritual Religious Spiritual rules and the constitution of a nation both are the same. In this state, each and every person realizes complete freedom and experiences ahimsa within and around. Such people are able to protect existence of animals, plants, oceans, mountains, rivers, lakes, ponds and other plain areas of the earth. Kriyayoga Meditation fulfills all criteria which keeps the nation peaceful and prosperous. The principle and philosophy of Spiritual Religious rule is always governed by the knowledge and power of unity among the various stages of human civilization and unity with all creations of Cosmos. Any religious rule which is practiced and honoured by a group of people, should not be considered religious rule. In the present human civilization, people are having various concepts behind religions. They think that religions are many and all have to be honoured. In fact, these are not religions but sectarian, localized and limited principles observed and followed by a small group of people. Various religions are various sectarian thoughts of division which have widened the gulf among various human civilizations. In fact, religion is one which binds all civilizations together and establishes unity amongst all nations of the world. The so-called different religions should be called sectarian principles. Kriyayoga Meditation is practicing the philosophy and principle of religion and is known as non-sectarian lifestyle. In brief, we should celebrate the simple quote "Expansion of Kriyayoga Meditation brings True Development of Nation".